दिनांक - 05.05.2020

राजनीति विज्ञान - बी॰ए॰ प्रथम वर्ष

अब्दुल कैश
सहा॰ प्राध्यापक राजनीति
विज्ञान शेरशाह महाविद्यालय
सासाराम

राज्य की उत्पत्ति का दैवीय सिद्धांत

राज्य की उत्पत्ति के कई सिद्धांत हैं, इनमें सर्वाधिक प्राचीन सिद्धांत दैवीय उत्पत्ति का सिद्धांत है। इस सिद्धांत की मूल मान्यता यह है कि राज्य एक ईश्वरीय संस्था है, इसकी उत्पत्ति एवं विकास में मनुष्य का कोई योगदान नही है। राजा ईश्वर का प्रतिनिधि है जिसे ईश्वर ने शासन प्रबंधन हेतु नियुक्त किया है। राजा अपने सभी कार्यों के लिए केवल ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है, मनुष्यों के प्रति उसकी कोई जवाबदेही नही है। इस सिद्धांत का जन्म उस समय हुआ जब धार्मिक और राजनैतिक शक्तियाँ एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबद्ध थी। प्राचीन समाजों में इस बात के भी साक्ष्य प्राप्त होते हैं कि राजा मुख्य पुरोहित का भी कार्य करता था। उस समय मनुष्य राजा की आज्ञा का पालन इसलिए करते थे क्योंकि वे मानते थे कि राजा में दैवीय शक्ति निहित होती है और अगर वे राजा की आज्ञाओं का पालन नही करेंगे तो राजा अपनी दैवीय शक्ति द्वारा उनका विनाश कर देगा। उस समय मनुष्य का विवेक विकसित नही हुआ था न ही वैज्ञानिक ढंग से मनुष्यों ने समाज का अध्ययन प्रारंभ किया था जिसके कारण सभी विषय ईश्वर पर आकर रुक जाते थे।

प्राचीन समाजों में यही सिद्धांत प्रचलित था। विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों मे भी इसका उल्लेख मिलता है जैसे महाभारत, गीता इत्यादि। यहाँ एक बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि ये प्रणाली केवल भारतीय समाजों में ही नही प्रचलित थी बल्कि प्राचीन मिश्र एवं चीन के समाज में भी दैवीय सिद्धांत परिलक्षित होता है। ईश्वर एवं राज्य के बीच संबंध को रेखांकित करते हुए प्लूटार्क ने लिखा है कि "एक नगर की स्थापना बिना भूमि के संभव है, परन्तु बिना ईश्वर में विश्वास के राज्य स्थापित नही हो सकता है। 16वी एवं 17वी इस मान्यता को लेकर संघर्ष की शुरुआत हुई। Protestants Reformers ने राज्य शक्ति को ईश्वर द्वारा विरचित बताया तथा इस बात का वकालत की कि राज्याज्ञा मानना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है। Luther, Calvin, Zwingli

Scanned with CamScanner

जैसे विचारक इस पर एकमत थे। Protestant Reform के दौरान एक ऐसा वर्ग भी था जिसने इस बात को सिद्ध करने का प्रयास किया कि राज्य एक मानवीय संस्था है।

डॉ० फिगिस ने दैवीय अधिकार सिद्धांत के कुछ आधार बताए हैं जो निम्नलिखित हैं :-

(1):⇒ राज्य ईश्वर द्वारा स्थापित संस्था है इसके निर्माण में मनुष्य की कोई भूमिका नही है।

(2):⇒ वंशक्रम द्वारा उदित उत्तराधिकार के सिद्धांत को समाप्त नही किया जा सकता है।

(3):⇒ राजा अपने समस्त कार्यो के लिए केवल ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है।

(4):⇒ किसी भी परिस्थिति में जनता राजा की आज्ञाओं का निषेध नही कर सकती।

इस सिद्धांत के समर्थक विद्वानों में जेम्स प्रथम, लुई XIV तथा राबर्ट फिल्मर का नाम उल्लेखनीय है। इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम ने सिंहासन पर बैठने से कुछ वर्ष पूर्व 'The True Law of a Free Monarchy' नामक पुस्तक लिखी जिसके अन्तर्गत उन्होने इस सिद्धांत को विस्तारपूर्वक प्रतिपादित किया। उनका मानना है कि राजा के अधिकार दैवीय है और जनता उसके विरूद्ध कुछ नही कर सकती है। ब्रिटेन की संसद को दिये एक भाषण में जेम्स प्रथम ने कहा था कि "राजा एवं ईश्वर में इतनी साम्यता है कि यह कहना उचित है कि राजा ही ईश्वर है।" राबर्ट फिल्मर ने भी अपनी पुस्तक 'Patriarcha' में राज्य की उत्पत्ति के दैवीय सिद्धांत का समर्थन किया। उसका तर्क था कि राजतंत्र स्वाभाविक है, जिस प्रकार कुटुम्ब का मुखिया पिता होता है ठीक उसी प्रकार राज्य का मुखिया राजा होता है। 17 वी शताब्दी के पश्चात इस सिद्धांत का क्षरण होने लगा था। इसका स्थान सामाजिक समझौते के सिद्धांत ने ले लिया जिसकी मूल मान्यता यह है कि राज्य एक मानवीय संस्था है जिसका निर्माण लोगों ने अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया है। इस सिद्धांत पर 18 वी शताब्दी के अंत में फ्रांस की राज्य क्रांति ने भयंकर आघात किया। यह कहना बिल्कुल उचित होगा कि 18 वीं शताब्दी के समाप्त होते-होते यह सिद्धांत भी लुप्तप्राय हो गया था।

Scanned with CamScanner

इस सिद्धांत के लुप्त होने के अनेक कारण थे जो निम्नलिखित हैं।

①=> यह सिद्धांत राजाओं की स्वेच्छाचारीता पर आधारित था।

②:> शासन संचालन की प्रक्रिया में जनता की कोई भागीदारी नही थी।

③:> जनता के अधिकार नगण्य थे जबकि कर्तव्यों की सूची लंबी थी जिसमे राज्याज्ञा का पालन करना सर्वप्रमुख था।

महत्व:=> इसमे कोई संदेह नही है कि यह सिद्धांत नितांत ही अवैज्ञानिक है। यह निरंकुशता तथा स्वेच्छाचार पर आधारित है लेकिन इस सिद्धांत ने भय एवं धर्म के आधार पर उस समय समाज को व्यवस्थित एवं संगठित करने का कार्य किया जब समाज विखण्डन एवं अराजकता की स्थिति में था।

Scanned with CamScanner